ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 28th April 2018, Revised on 18th May 2018; Accepted 26th May 2018

आलेख

राष्ट्र निर्माता है शिक्षक

* डा0 प्रमोद वल्लभ गोस्वामी
व्याख्याता, राजीव एकेडमी, मथुरा
मोबाईल – 9045041960

Key words: *नकारात्मक प्रवृत्तियॉ, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक अधिकार, स्वतन्त्रता, समानता आदि।*

शिक्षा समाज का दर्पण है और इस नाते समाज की आशाओं व आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करना शिक्षा का कर्तव्य ही नहीं अनिवार्यता भी हो जाती है। इन कर्तव्यों और अनिवार्यताओं को पूरी करने का माध्यम निश्चय ही शिक्षक ही होता है। विद्यार्थियों के मनोमस्तिष्क पर सर्वाधिक छाप अपने शिक्षक की ही पड़ती है। प्राथमिक स्तर पर जब बालक विद्यालय जाना आरम्भ करता है तो वहॉ उसकी आदतों, व्यवहारों आदि का विकास शिक्षक की ही छत्रछाया में होता है। यदि वहॉ शिक्षक बालक के अधिक नजदीक होता है, शिक्षक उसका पूरा ध्यान रखते है तो उसके अन्दर जो भी नकारात्मक प्रवृत्तियॉ व व्यवहार होता है वह शिक्षक के सहानुभूतिपूर्ण रवैये व व्यवहार के कारण सकारात्मक व्यवहार में परिणित हो जाता है। विद्यालय में बालक शिक्षक को ही दुनियॉ का सर्वश्रेश्ठ व्यक्ति मानता है। शिक्षक के आचार विचार, व्यवहार, क्रियाकलापों आदि की छाप व्यक्ति में जीवनपर्यन्त दिखाई देती है अतः यहॉ इस स्तर पर शिक्षक का कार्य अत्यन्त चुनौतीपूर्ण भी होता है क्योंकि आरम्भिक स्तर पर यदि बालक में किसी गलत आदत का विकास हो गया या वह उपेक्षित हेा गया तो जीवनभर के लिए कुंठा का शिकार भी हो सकता है।

किशोरवस्था आने पर विद्यार्थी जब कॉलेज में प्रवेश लेता है तब उसमें विभिन्न आकांक्षाओं के बीज स्फुटित होने लगते है अतः शिक्षक की यह भूमिका होती है कि विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षित करे कि वे भावी जीवन में विशम, अप्रत्याशित या अनपेक्षित परिस्थितियों का मुकाबला सफलतापूर्वक कर सकें। इसके अलावा शिक्षक द्वारा ऐसा प्रशिक्षण अपेक्षित है जो विद्यार्थियों में अभिनवन की क्षमता, समायोजन की मानसिकता तथा उद्यमिता के गुणों का विकास कर उन्हें स्वरोजगार और स्वाध्याय की ओर प्रेरित कर सकें।

आज का हमारा समाज कल के समाज से बहुत भिन्न है। इसके आकार प्रकार तथा स्वरूप में बहुत से परिवर्तन हुए है। इन सामाजिक परिवर्तनों ने शिक्षा की महती आव यकता प्रदर्शित की है। सुलभ व गुणतत्तापूर्ण शिक्षा का सशक्त माध्यम शिक्षक के अलावा अकल्पनीय है। यदि कोई माध्यम हो भी सकता है। तो उतना अधिक प्रभावशाली नहीं होगा जितना कि एक योग्य शिक्षक। सदियों की गुलामी के बाद देश को स्वतन्त्रता मिली, साथ ही नयी–नयी समस्याओं और उततरदायित्वों का भी जन्म हुआ। इस दिन ऐसा लगा जैसे हम युगों की प्रगाढ़ निद्रा से जागकर कर्तव्यरत होने जा रहे है। सभी नागरिक अधिकार–मूल अधिकार, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक अधिकार और स्वतन्त्रता, समानता तथा भाई–चारे का पाठ हमने पढ़ा, यह सब शिक्षा के द्वारा सम्भव हो सका। इसके बाद दूसरा कदम प्रजातन्त्र की ओर बढ़ाया और 26 जनवरी, 1950 को राष्ट्र को प्रजातन्त्रात्मक गणतन्त्र घोषित किया। इस कदम ने भारतीयों के कन्धों पर बहुत बड़ा भार डाल दिया। इस कदम को सार्थक एवं प्रेरणादायक बनाने के लिए यह आव यक हो गया कि दंश के जन कुशल नागरिक हो जा सफलतापूर्वक अपने प्रजातन्त्रात्मक शासन तथा उसके द्वारा प्राप्त अधिकरों एवं कर्तव्यों का पूर्णरूपेण से निर्वाह कर सकें। इस कदम सफलता के लिए यह आवश्यक हो गया कि विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिससे शिकवे एक योग्य नागरिक बनकर अपने वर्तमान प्रजातन्त्रात्मक समाज में व्यवस्थित हो सकें। इस

आव यकता की पूर्ति एक शिक्षक की आव यकता के द्वारा पूर्ण की जा सकी। शिक्षक द्वारा ही विद्यार्थियोंके समक्ष आधुनिक विश्व को स्पश्ट तथा सरल बनाना सम्भव हो सका है। शिक्षक द्वारा उनको अनिवार्य आदतों एवं कुशलताओं में प्रशिक्षित और उनमें ऐसी अभिरूचियों तथा आदतों को विकसित करना सम्भव हो सका है जिसे प्राप्त कर बालक तथा बालिकायें प्रजातन्त्रीय समाज में अपना स्थान ग्रहण करने में समर्थ हो सके हैं।

भारतीय समाज द्वारा स्वतन्त्रता के प चात समाजवादी समाज की स्थापना की ओर कदम बढ़ाया गया। पाश्चात्य देशों में इसका हिंसात्मक क्रान्ति द्वारा ग्रहण करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु भारतीय समाज ने इस ओर भाान्तिपूर्ण कदम उठाये। गॉधीजी के सर्वोदय और विनोबा भावे के भूदान आदि अहिसात्मक आन्दोलनों द्वारा भाुरूआती कार्यक्रम हुये। स्वर्गीय प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, ''मैं समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूॅ और शिक्षा को इस ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए।'' अतः अदि शिक्षा इस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहती है तो शिक्षक द्वारा अपने पाठ्यक्रम में उस विषय–सामग्री को राना पड़ेगा जिनके द्वारा नागरिको द्वारा सामाजिक–कुशलता, सहयोग, सहकारिता, सामूहिकता, सामाजिक न्याय आदि गुणों का विकास हो सके। शिक्षक का मुख्य ध्येय विद्यार्थियों में सामाजिक चरित्र का निर्माण करना होता है क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति ही एक राष्ट्र की आत्मा होता है। संविधान की धारा 38 में यह उपबन्धित किया गया है कि राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था करे जिसमें सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक न्याय राश्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्रमाणित करे तथा राज्य भरसक कार्यसाधक के रू‍प में स्थापना और संरक्षण करके लोक–कल्याण की उन्नति करने का प्रयास करेगा।

देश में कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए भारतीय संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत अनुच्छेद 39, अनुच्छेद 40, अनुच्छेद 42, अनुच्छेद 45 के अनुसार कार्य करने के लिए व्यावहारिक कदम उठाये गये है यथा– पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यान्वयन, उत्पादन के विभिन्न साधनों का राष्ट्रीयकरण, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था आदि। इससे नागरिकों के ऊपर उनके संचालन एवं संगठन का भार आया। इस प्रकार नागरिकों के उत्तरदायित्वों, संस्थाओं, समितियों, संगठनों आदि में वृद्वि हुई। इस प्रकार उनका जीवन जटिल बन गया। इन मानवीय सम्बन्धों का सरल एवं स्पष्ट करने, नागरिकों को इन दायित्वों का पूर्णरूप से निर्वाह करने तथा जटिल जीवन को समझने के लिए व्यवस्थित रूप से शिक्षा देने की आवश्यकता महसूस की गई। व्यक्तियों को यह शिक्षा घर–परिवार या माता–पिता से नहीं वरन् विद्यालय व शिक्षकों के द्वारा ही मिलना सम्भव हो सका है। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा इसको व्यवस्थित रूप देने का प्रबन्ध किया गया है।

राष्ट्र की उन्नति के लिए ग्रामों की प्रगति होना अत्यन्त आव यक है क्योंकि देश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामों में ही निवास करती है। गॉधीजी जैसे महान शिक्षक व समाज–सुधारक के भी विचार थे कि देश की उन्नति गॉवों में कृशि की उन्नति, ग्राम–पंचायत के निर्माण व कुटीर उद्योगों द्वारा ही सम्भव है। अतः शिक्षा के द्वारा नागरिकों को इस प्रकार शिक्षित किया गया कि वे उस वातावरण में अपने को समायोजित कर सके जो समाज एवं प्रकृति की अन्योन्याश्रिता पर निर्भर है।

*** Corresponding Author:**

डा0 प्रमोद वल्लभ गोस्वामी

व्याख्याता, राजीव एकेडमी, मथुरा

मोबाईल – 9045041960